श्रीसूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

भगवान सूर्य की स्तुति में स्तोत्र

श्लोक १

प्रातः स्मरामि तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादि हेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्॥

मैं प्रातः समय सावित्री अर्थात् श्रेष्ठ रूप वाले,
तेजोमय भगवान सूर्य का ध्यान करता हूँ,
जिनका मण्डलरूप ऋग्वेद है,
शरीर यजुर्वेद है और जिनकी किरणें सामवेद हैं;
जो ब्रह्माण्डीय प्रकाश के स्रोत हैं और जिनके मोहक स्वरूप से
ब्रह्मा, विष्णु और शिव की शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

श्लोक २

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिर्-
ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च।
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च॥

मैं प्रातःकाल अपने शरीर, वाणी व मन द्वारा,
धधकती हुई अग्नि के उस स्वरूप को नमन करता हूँ।

ब्रह्मा व समस्त देवगण उनकी अर्चना करते हैं।
वे वर्षा के कारणरूप हैं, तथापि वे स्वयं कारणरहित हैं।
वे तीनों लोकों के पालक हैं और त्रिगुणात्मक हैं [त्रिगुण हैं, सत्त्व, रजस् और तमस् जो कि क्रमशः सामंजस्य, क्रियाशीलता और जड़त्व प्रदान करते हैं]।

श्लोक ३

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम्॥

वे जो देदीप्यमान प्रकाश व अनन्त शक्ति हैं,
जो पापों, शत्रुओं, रोगों व दुःखों को हरने वाले हैं,
उन सूर्य भगवान का मैं प्रातःकाल महिमागान करता हूँ।
वे आदिदेव हैं जो व्यक्ति को इन्द्रियों के बन्धनों से मुक्त करते हैं
और जो समस्त लोकों के लिए कालस्वरूप हैं।

श्लोक ४

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातःकाले पठेत्तु यः।
स सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात्॥

जो प्रातःकाल भगवान सूर्य की स्तुति में इन तीन श्लोकों का पाठ करते हैं,
वे समस्त व्याधियों से मुक्त हो जाते हैं और उन्हें परम सुख की प्राप्ति होती है।

‘श्रीसूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम्,’ भगवान सूर्य की स्तुति में एक संस्कृत स्तोत्र है। इस स्तोत्र का पाठ, नवीन आरम्भों के लिए आवाहन करने, संकल्पों को बनाने में हमें सम्बल प्रदान करने और आरोग्य एवं सुख की प्राप्ति हेतु भगवान सूर्य के सम्मान में किया जाता है। भारत में इसका पाठ विशेषकर उषाकाल में किया जाता है।

©२०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।